09038

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

जून, 2010

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पहला प्रश्न **अनिवार्य** है।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से ***किन्हीं तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **3x12=36**

(a) जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा ''क्या कहा, सात बज गए?'' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोली, ''और खाने का क्या है, अभी बना लूंगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना!''

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे-धीरे हाथों से चूड़ियां खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीजें बड़े जतन से अपने एकमात्र संदूक में रख दीं। और फिर बड़े ही बुझे हुए दिल से अंगीठी जलाने लगीं।

(b) चौथे दिन संध्या समय वह विपत्ति-कथा समाप्त हो गई। उसी समय जब पशु-पक्षी अपने-अपने बसेरे को लौट रहे थे; निर्मला का प्राण-पक्षी भी दिन भर शिकारियों के निशानों, शिकारी चिड़ियों के पंजों और वायु के प्रचंड झोंकों से आहत और व्यथित अपने बसेरे की ओर उड़ गया।

(c) आत्म-चिंतन में जो ऐश्वर्य है, क्षत्रिय! वह इन तुच्छ भड़कीले वैभवों में नहीं है - वैभव जो अपने साथ मृत्यु लिए हुए है! शत्रु के गुप्तचरों और विषकन्याओं पर विश्वास करने वाला सम्राट एक ही पदक्षेप में मृत्यु का आलिंगन उसी भाँति करता है जैसे एक ही उछाल में पतंगा दीप-शिखा के भीतर जलती हुई मृत्यु में भस्म हो जाता है। तुम भी भस्म हो जाओ और अपने वैभव का जला हुआ काला धुआँ अपने पीछे छोड़ जाओ!

(d) नहीं, अभी आत्महत्या नहीं करूँगी। यह तीखी छुरी इस अतृप्त हृदय में विकासोन्मुख कुसुम में विषैले कीट के डंक की तरह चुभा दूँ या नहीं, इस पर विचार करूँगी। यदि नहीं तो मेरी दुर्दशा का पुरस्कार क्या कुछ और है? हाँ, जीवन के लिए कृतज्ञ, उपकृत और आभारी होकर किसी के अभिमानपूर्ण आत्म-विज्ञापन का भार ढोती रहूँ-यही क्या विधाता का निष्ठुर विधान है? छुटकारा नहीं? जीवन नियति के कठोर, आदेश पर चलेगा ही? तो क्या यह मेरा जीवन भी अपना नहीं है?

(e) अस्त्र बढ़ाने की प्रवृत्ति मनुष्यता की विरोधिनी है। मेरा मन पूछता है - किस ओर? मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य-जाति से ही प्रश्न किया है - जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ - जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं? ये हमारी पशुता की निशानी है।

2. 'निर्मला' उपन्यास के द्वारा प्रेमचंद क्या संदेश देना चाहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **16**

3. 'उसने कहा था' कहानी की कथावस्तु का सार प्रस्तुत कीजिए। **16**

4. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर ध्रुवस्वामिनी का चरित्र-चित्रण कीजिए। **16**

5. 'गिरती दीवारें' एकांकी नाटक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **16**

6. 'मित्रता' के आधार पर रामचंद्र शुक्ल के निबंधों की विशेषताएँ बताइए। **16**

7. हिन्दी नाटक परंपरा का उल्लेख करते हुए जयशंकर प्रसाद के नाटकों का महत्त्व बताइए। **16**

8. भारतेंदु युगीन हिन्दी गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए। **16**

9. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : **2x8=16**

(a) प्रेमचंद के उपन्यास

(b) कहानी और उपन्यास में अंतर

(c) 'आकाश-दीप' की भाषा-शैली

(d) 'राम का मुकुट भीग रहा है' का प्रतिपाद्य

(e) 'रीढ़ की हड्डी' में व्यंग्य